United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

भारतीय संस्कृति और साहित्य में ज्ञान परंपरा

डॉ. नक्का वेंकटरमण
हिन्दी विभागाध्यक्ष
सरकारी महाविद्यालय, रामचंद्रपुरम,डॉ.बी.आर.अम्बेडकर कोनासीमा जिला,आंध्रप्रदेश

प्रस्तावना:

इस विशाल भूमंडल में सहस्र शताब्दियों के पूर्व जिस धर्म-संस्कृति की आधार वेदों के सार-गर्भित सूत्रों के आधार पर रखी गयी, उसकी गरिमा का अनिर्वचनीय होना अत्यंत आवश्यक है |

संस्कृति:

संस्कृति शब्द का मूल अर्थ है- परिष्कृत करना | आज हिन्दी में यह culture शब्द का प्रयोग 'समस्त सीखे हुए व्यवहार' के अर्थ में होता है, जो सामाजिक परंपरा से प्राप्त होता है| यह सद्गुणों के सन्दर्भ में होता, जो मनुष्य के व्यक्तित्व को परिष्कृत करते हैं|

भारतीय संस्कृति:

भारतीयता में भारतीय जीवन-मूल्यों के प्रति अटूट आस्था समाई हुई है| भारतीय मूल्य है- 'वसुधैक कुटुम्ब' जिसका तात्पर्य है समष्टि हित के लिए व्यक्ति हित का परित्याग| भारतीयता हमें देश-प्रेम सिखाती है, परंतु मानवता का निषेध नहीं करती|

इस संस्कृति में अणु से अनंत तक पर्याप्त तत्वों को यदा संभव करने के प्रयास परिलक्षित होते हैं, इतना ही नहीं इस योग भूमि में आयुर्विज्ञान से अंतरिक्ष तक के रहस्यों का विस्तार से उद्घाटन हुआ है | जिस समय में पृथ्वी के अन्य प्रदेशों में मानव अनेक तरह के जीवन-यापन कर रहा था, तब इस कर्म भूमि में सृष्टि के अनिर्वचनीय रहस्यों को खोजने के प्रयासों का शुरुआत हो चुका था |

इस विषय में भारतीय संस्कृति ने स्वयं को प्रकृति के साथ पूर्णतः तादात्म्य कर लिया, इसलिए इस देशवासियों ने अपने जीवन का अनिवार्य अंग बनालिया और प्रकृति के साथ पूर्ण सामंजस्य ही भारतीय संस्कृति का मूल-मन्त्र रहा | क्यों कि इसका मूल कारण है इस देश का कृषि-प्रधान होना ही | मुख्य रूप से हमारा भारतीय संस्कृति ग्रामीण अंचलों से ही सुसंबद्ध है| भक्ति एवं आध्यात्मिकता के सन्दर्भ में समूचे भारत में एकता का दर्शन तो होता है| भारत के लगभग 6 लख से अधिक लोग ग्रामीण अंचलों में प्रचलित सामाजिक परम्पराओं, धार्मिक

मान्यताओं पर त्योहारों आदि के आधार पर जो सांस्कृतिक भिन्नता परिलक्षित होती है वही इस विशाल देश की अप्रतिम धरोहर है|

हमारा स्वतंत्र भारत को हम माँ मानकर इसकी पूजा करते है| भारत की सुन्दरता के सभी दीवाने हैं| कश्मीर और हिमाचल की पहाड़ियां, राजस्थान की रेती, दक्षिण भारत के समुद्री तट, पंजाब और उत्तरप्रदेश के मैदानी भाग सब का मन मोह लेते हैं| यह राष्ट्र अत्यंत प्राचीन है| हड़प्पा और मोहन्जोदाडो की संस्कृति हमें बताती है की हमारे पूर्वज बहुत पहले से ही सभी सुसंस्कृत, उन्नत और समृद्ध थे| भारत ने विश्व को अनेक धर्म दिए, बौद्ध, जैन, सिख आदि इसी धरती की देंन है| यहाँ के लोगों ने भूलकर भी अन्य किसी देश पर कब्ज़ा नहीं किया|

आज हमारा भारत चारों ओर उन्नति की दशा में बढ़ रहे हैं| हमारी कला, फिल्मी और तकनीकी क्षमता विश्व भर में चर्चित हैं| आध्यात्म के क्षेत्र में हमारे साधु और महात्मा पूरे विश्व को आज भी प्रभावित कर रहे हैं| भारत की ऐसी संस्कृति है, जो किसी दूसरे देश में नहीं है और वे देश उसे जानते भी नहीं| हमें अपने पूर्वजों से ऐसे संस्कार मिले हैं, जो किसी और देश के लोगों को नहीं मिल सकती है| भारतीय संस्कृति के बारे में सारी दुनिया जानती है और इसी संस्कार मिले हैं, जो कहीं भी मिलती नहीं है| ऐसे देश और संस्कृति को पाकर हम धन्य हैं| यह हमारा कर्तव्य है कि इस अतुल्य भारत की संस्कृति की रक्षा करना और इसकी महानता लो बनाए रखना है| इसलिए मैं हमारा भारत माता को और हमारा भारतीय संस्कृति को तहे दिल से वंदना करता हूँ|

आज भारतवासी चाहे विश्व के किसी भी कोने में चले जाए तो अपने साथ अपनी संस्कृति को लेकर चलते हैं और वे अपने चारों ओर एक ऐसे महेल या निवास बना लेते हैं जो उसे आनंद प्रदान डरने के साथ-साथ अपने साथ रहनेवाले लोगों को भी आनंद प्रदान करवाता है| यदि हमारा भारतीय संस्कृति की तुलना विश्व की अन्य देशों की संस्कृतियों से करेंगे तो यह पाएंगे कि अनेक धर्म और संप्रदाय के लोगों के होने के बावजूद भी हम एक ही प्रकार के भाव और विचार रखते हैं| जब कोई समस्या हमारे सामने आती है तो हम भारतीयों की सोच एक जैसी ही होती है| राज्यों की आधार पर हमारी भाषाएँ अलग हो सकती हैं परंतु हमारे सोचने में वाही भारतीयता का भाव होता है|

अतिथि देवो भाव की भावना हमारी संस्कृति की जान है| हम भारतीयों का अतिथि सत्कार अतुलनीय है | उस में निहित प्रेम भावना वर्णनातीत है | आश्रम धर्मों की रीति भारतीय संस्कृति में ही देखी जा सकती है| गुरु-शिष्य की भावना और उसके महत्व को हमारे रूशी-

मुनियों ने जैसा बना रखा है वैसे विश्व साहित्य में प्राप्त होना दुर्लभ है| समर्पण और त्याग की भावना हमारी संस्कृति को और भी उद्दीप्त करती है|

हमारी संस्कृति के मूल विषय है कि वेश-भूषा, आहार नियम, बनावट सिंगार आदि| कोई पर्व त्यौहार हो या विवाहावसर या सांस्कृतिक सम्मेलन या सभा समारोह हो हरेक अवसर पर हम भारतवासी अच्छी तरह सज-धज कर उस में सम्मिलित होते हैं| हमारी भारतीय संस्कृति की एक और महान विशेषता वात्सल्य भावना है| इसके द्वारा हमारे देश में माता-पिता का अपने बच्चों के प्रति अनुराग की भावना का पता चलता है| मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत जितने भी संस्कार होते हैं उससे हमारी भारतीयता और भारतीय संस्कृति झलकती है|

भारतीय साहित्य:

साहित्य समाज का दर्पण होता है| यदि हमें किसी भी समाज का आकलन करना हो तो समाज के साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है| राष्ट्र निर्माण में साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है| किसी देश का साहित्य उच्च कोटि की है, तो वह राष्ट्र हमेशा उन्नत शील बना रहेगा | राष्ट्र का साहित्य, उस राष्ट्र के समाज का विकास करता है और वह समाज राष्ट्र का निर्माण करता है| संसार के समस्त राष्ट्रों की अपेक्षा हमारे राष्ट्र का प्राचीन साहित्य अत्यधिक उन्नत व उच्च कोटि क है| संसार के प्राचीनतम वैदिक साहित्य, जो अपनी प्रत्येक विधा में इतना सम्पूर्ण प्रतीत होता है कि जैसे वह कालातीत होकर अपनी परखता के शिखर पर पहुंचकर स्वयं ही ठहर गया हो| आधुनिक संसार के सभी भाषा साहित्य उससे प्रभावित हुए हैं|

उपसंहार:

भारतीय संस्कृति के आधार पर ही आज के दिनों में हमारा भाषा-साहित्य विश्व की सार्थकता और विस्तार, और उसके भविष्य की स्वर्णिम संभावनाओं के प्रति आशान्वित कराती है| भारतीय भाषाएँ उसके माध्यम से ही विश्व में भारतीयता अभिव्यक्ति पाती रही है, पा रही है| हिमालय से सागर-पर्यंत समस्त भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता, नैतिकता, सार्वभौम दर्शन और ज्ञान-विज्ञान विश्व में भारतीय भाषाओं में प्रकाशित, प्रसारित हो रहे हैं|